बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान।।

जय हनुमान संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।

जन के काज विलंब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै।

जैसे कूदि सिंधु महिपारा। सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।

आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका।

जाय बिभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरीख परमपद लीन्हा।

बाग उजारि सिंधु महं बीरा। अति आतुर जमकातर तीरा।

अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा।

लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर नभ भई।

अब बिलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी।

जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर ह्वै दुख करहु निपाता।

जै हनुमान जयति बल-सागर। सुर समूह समरथ भट नागर।

ॐ हनु हनु हनु हनुमत हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा।

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकरसुवन बीर हनुमंता।

बदन कराल काल-कुल-घातक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।

भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर। अगिन बेताल काल मारी मर।

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।

सत्य होहु हरि सपथ पाई के। राम दूत धरु मारु धाइ के।

जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहु अपराधा।

पूजा जप तप नेम अचारा। नहि जानत कछु दास तुम्हारा।

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हारे बल हौ दरपत नाहीं।

जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलंब न लावौ।

जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा।

चरन पकरि, कर जोरि मनावौ। यहि औसर अब केहि गोहरावौ।

उठु, उठु, चलु तोहि राम दुहाई। पाँय परौ, कर जोरि मनाई।

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनुमंता।

ॐ हं हं हांक देते कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल।

अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनंद हमारौ।

यह बजरंग-बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिरि कवन उबारै।

पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करै प्रान की।

यह बजरंग बाण जो जापै। तासों भूत-प्रेत सब कांपै।

धूप देय जो जपै हमेसा। ताके मन नहि रहै कलेसा।

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करै ध्यान।

बाधा सब हर, करै सब काम सफल हनुमान।।

सिया पति रामचन्द्र की जय

उमा पति महादेव की जय

पवन सुत हनुमान की जय

Last modified: 21:42